

योएल की पुस्तक और लाओदिकियाई सेवेथ-डे एडवेंटिस्ट चर्च - संख्या अठारह

Jeff Pippenger

2025-12-25

संख्या अठारह

हम अब्राहम की वाचा पर विचार कर रहे हैं, और अभी तक अब्राहम की उस भविष्यवाणी के पहलू को नहीं संबोधित किया है जिसका सीधा संबंध योएल की पुस्तक के प्रारंभिक पदों से है। दासत्व के 400 वर्षों की अब्राहम की भविष्यवाणी, पौलुस के 430 वर्षों के साथ मिलकर, ऐसी भविष्यसूचक संरचना बनाती है जो दानिय्येल 12:11 के 1290 वर्षों के साथ मेल खाती है। ग्यारहवें पद की 1290-वर्ष की भविष्यवाणी, अब्राहम और पौलुस की 430-वर्षीय रेखा की ओमेगा भविष्यसूचक अवधि है। यह सत्य उन बातों का एक तत्व है जो अंतिम दिनों में मुहर खुलने पर प्रकट होती हैं और जो बुद्धिमानों और दुष्टों को अलग करती हैं।

430 वर्षों की ओमेगा भविष्यवाणी के साथ "चार पीढ़ियाँ" का प्रतीक जुड़ा हुआ था, जो उस राष्ट्र के लिए परख के समय की एक अवधि की पहचान करता था जिसने परमेश्वर की चुनी हुई प्रजा को दासत्व में रखा। मूसा के लिए वह मिस्र था; और उन एक लाख चवालीस हजार के लिए, जो मूसा का गीत गाते हैं, वह 1798 से लेकर रविवार कानून तक संयुक्त राज्य अमेरिका का इतिहास है। प्रकाशितवाक्य तरह में "पृथ्वी का पशु" के रूप में दर्शाया गया संयुक्त राज्य अमेरिका एक मेमने के समान आरंभ होता है और अंत में अजगर के समान बोलता है। यूसुफ, जो मेमने का प्रतीक है, मिस्र में सापेक्ष शांति के काल का प्रतिनिधित्व करता है, जब तक कि एक नया फ़िरौन न आया और दासत्व आरंभ न हो गया। अतः, चौथी पीढ़ी में जिसका न्याय होता है—जो मूसा के लिए मिस्र था—वह राष्ट्र संयुक्त राज्य अमेरिका है। अवशेष का न्याय रविवार कानून के समय होता है, जैसा कि उन विपत्तियों द्वारा प्रतिरूपित है जिनकी परिणति इब्रानियों के लिए उनके द्वार की चौखट पर रक्त के साथ हुई, और तत्पश्चात लाल समुद्र में मिस्र के राष्ट्र के साथ। यूसुफ और मूसा एक अच्छे फ़िरौन और एक बुरे फ़िरौन का प्रतिनिधित्व करते हैं; और संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए यह पहले मेमना, और फिर अजगर है।

अब्राहम की न्याय की भविष्यवाणी, जो चौथी पीढ़ी में पूरी होनी थी, इसमें यह तथ्य भी शामिल था कि अनुग्रह-काल का समापन क्रमिक होता है; क्योंकि मूसा के द्वारा अब्राहम की भविष्यवाणी की पूर्ति में, न केवल मिस्र के लिए अनुग्रह-काल समाप्त हुआ, बल्कि अमोरियों के लिए अपने अनुग्रह-काल का प्याला भर लेने हेतु अभी भी समय शेष था—जबकि मिस्र अपना भर चुका था। मिस्र के लिए लाल समुद्र, संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए "रविवार का कानून" था, और तब "पृथ्वी के हर अन्य देश" संयुक्त राज्य अमेरिका के "उदाहरण का अनुसरण" करेंगे, जैसा कि मिस्र के अनुग्रह-काल के समापन के बाद अमोरियों द्वारा दर्शाया गया था।

अमोरी, अब्राहम की वाचा में, मिस्र की नदी से बाबेल की नदी तक संसार को निरूपित करने वाली दस जातियों में से एक हैं, और इसलिए अमोरी संसार की उन जातियों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो संयुक्त राज्य अमेरिका में रविवार कानून के बाद, राष्ट्रों के रूप में अपने-अपने अनुग्रह काल को समाप्त करती हैं। अमोरी संसार पर न्याय के समापन का बाइबिलीय प्रतीक हैं, और यह तीसरी और चौथी पीढ़ी में होता है। लाल समुद्र संयुक्त राज्य के लिए अनुग्रह के समय के समाप्त होने का प्रतीक है, और अमोरी उन राष्ट्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो मानवता के अनुग्रह काल के समाप्त होने तक क्रमशः अपना अनुग्रह काल समाप्त करते जाते हैं। इसलिए, अमोरी लाल समुद्र पर रविवार कानून के संकट के काल से लेकर पूर्वी पवन द्वारा उद्धार तक की अवधि का प्रतीक हैं, जब परमेश्वर के लोगों के लिए उद्धार का मार्ग खुल जाता है।

परंतु अब्राहम की भविष्यवाणी न केवल संयुक्त राज्य अमेरिका को मिस्र और संसार को अमोरियों के रूप में देखते हुए "चौथी पीढ़ी" की बात करती है, बल्कि उससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि वह लाल समुद्र पार करने वाले परमेश्वर के लोगों की पीढ़ी को "चौथी पीढ़ी" के रूप में ठहराती है। जब हम तीन चरणों में अब्राहम के पहले चरण में "चार पीढ़ियों" की समझ से, जो कुछ हम खंगाल सकते हैं, खंगाल लेते हैं, तब हम अब्राहम की वाचा के दूसरे और तीसरे चरण पर विचार करेंगे। दूसरा चरण अध्याय सत्रह है, और तीसरा चरण, स्वाभाविक रूप से, अध्याय बाईस है।

दानियेल के बारहवें अध्याय में तीन भविष्यसूचक अवधियों की पहचान की गई है, और वे सभी उस भविष्यसूचक समय का प्रतिनिधित्व करती हैं जो 1844 में समाप्त हो गया। उन तीनों पर लगी मुहर अन्तिम दिनों में खोली जाती है, और वही तीनों अवधियाँ अन्तिम दिनों में परमेश्वर की प्रजा पर आने वाली ज्ञान-वृद्धि का प्रतिनिधित्व करती हैं। सूत्र का वस्त्र पहने मनुष्य के रूप में मसीह, पद सात में इन तीन भविष्यसूचक अवधियों में से पहली को प्रस्तुत करते हैं, और ऐसा करते हुए वह स्वयं को प्रकाशितवाक्य अध्याय दस के स्वर्गदूत के साथ संबद्ध करते हैं, जो जल पर नहीं, वरन् पृथ्वी और समुद्र पर खड़ा है।

और जिस स्वर्गदूत को मैंने समुद्र और पृथ्वी पर खड़ा देखा था, उसने अपना हाथ स्वर्ग की ओर उठाया, और उसकी शपथ खाई जो युगानुयुग जीवित रहता है, जिसने स्वर्ग और उसमें की वस्तुओं को, पृथ्वी और उसमें की वस्तुओं को, और समुद्र और उसमें की वस्तुओं को सृजा है, कि अब और विलम्ब न होगा। प्रकाशितवाक्य 10:5, 6.

बारहवें अध्याय के सातवें पद में सन के वस्त्र पहने हुए मनुष्य भी उसकी शपथ खाता है जो सदा जीवित रहता है।

और मैंने उस पुरुष को सुना जो सन के वस्त्र पहने हुए था, जो नदी के जल के ऊपर था; जब उसने अपना दाहिना हाथ और अपना बायां हाथ स्वर्ग की ओर उठाए, और उसकी शपथ खाई जो सदा जीवित रहता है कि यह एक काल, कालों और आधा काल तक होगा; और जब वह पवित्र लोगों की शक्ति को तितर-बितर करना पूरा कर चुका होगा, तब ये सब बातें पूरी हो जाएँगी। दानियेल 12:7.

हमें प्रेरणा से यह बताया गया है कि दानियेल की पुस्तक में विद्यमान वही भविष्यवाणी की रेखा प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में फिर से उठाई गई है, और मिलरवादी समझ यह है कि ये दोनों वर्णन मसीह के बारे में समानांतर खंड हैं। मसीह, प्रकाशितवाक्य में छोटी पुस्तक वाले स्वर्गदूत के रूप में, 1844 में भविष्यसूचक समय के अनुप्रयोग के अंत की पहचान कराते हैं; और दानियेल की पुस्तक में महीन सन के वस्त्र पहने पुरुष के रूप में मसीह यह दर्शाते हैं कि जब संयुक्त राज्य अमेरिका में रविवार का कानून आ जाएगा, तब दानियेल के अंतिम दर्शन की सारी अद्भुत बातें पूरी हो जाएँगी। उस पवित्र इतिहास के भीतर, जो रविवार के कानून से पहले चलता है और उसी पर जाकर चरम पर पहुँचता है, परमेश्वर के लोगों को एक ऐसे काल के लिए तितर-बितर किया जाना था, जिसे 1260 के प्रतीक द्वारा दर्शाया गया है। रविवार के कानून से पहले का यह तितर-बितर करने का काल प्रकाशितवाक्य अध्याय ग्यारह में प्रस्तुत है, जहाँ मूसा और एलिय्याह को मार डाला जाता है और वे साढ़े तीन दिन तक सड़क पर मृत पड़े रहते हैं, जो 1260 का एक प्रतीक है।

सातवीं आयत में, सन के वस्त्र पहने हुए मनुष्य यह इंगित करता है कि जब पवित्र लोगों की शक्ति का तितर-बितर होना अपने साढ़े तीन दिन पूरे कर लेगा, तब अंतिम दिनों में परमेश्वर के लोगों पर आने वाले "आश्चर्य" समाप्त हो जाएँगे। हमने पिछला लेख बहन व्हाइट की जकर्याह अध्याय तीन पर की गई टीका-टिप्पणी के साथ समाप्त किया। पहला वाक्य यह कहता था, "जकर्याह का यहोशू और दूत का दर्शन प्रायश्चित्त के महान दिन के समापन दृश्यों में परमेश्वर के लोगों के अनुभव पर विशेष बल से लागू होता है।" अध्याय में, और उस अध्याय पर बहन व्हाइट की प्रेरित टीका में, एक लाख चवालीस हजार वे "आश्चर्य का विषय बने पुरुष" हैं। दानियेल के अंतिम दर्शन के "आश्चर्य" जो रविवार के कानून द्वारा पूरे होते हैं, वही "आश्चर्य" हैं जो परमेश्वर के लोगों की मुहरबंदी से जुड़े हैं।

दानिय्येल का बारहवां अध्याय उस प्रकाश को देता है जो अन्तिम दिनों में एक लाख चवालीस हज़ार पर मुहर लगाता है। वह प्रकाश तीन भविष्यवाणी कालों द्वारा निरूपित है, जिन्हें मिलराइट इतिहास में सत्य के रूप में पहचाना और स्थापित किया गया था। ये तीन काल तीन पदों में प्रस्तुत किए गए हैं और सत्य की संरचना को थामे रखने वाले तीन स्तम्भ हैं। सत्य की संरचना तीन-चरणीय प्रक्रिया द्वारा थामी जाती है। यह तीन-चरणीय प्रक्रिया नौ पदों (4-12) के खंड में, उन तीन पदों द्वारा निरूपित है जो भविष्यवाणी का समय प्रस्तुत करते हैं। वे तीन भविष्यवाणी काल, जब उन्हें मूलभूत मिलराइट समझ के आधार से देखा जाता है, तो तीन प्रतीकात्मक काल उत्पन्न करते हैं जो मिलराइट समझ के अनुरूप परिभाषित हैं, परंतु उनमें समय का तत्व लागू नहीं होता।

वे तीन कालावधियाँ उसी पवित्र शास्त्र के उस खंड में स्थित हैं जो 'भविष्यवाणी के मुहरबंद होने—और फिर खोले जाने—की प्रक्रिया' को परिभाषित करता है, और जिसमें तीन-स्तरीय परीक्षा-प्रक्रिया का शास्त्रीय बाइबलीय वर्णन भी सम्मिलित है। वे नौ पद, जिनकी शुरुआत दानिय्येल को अपनी पुस्तक को मुहरबंद करने के लिए कहे जाने से होती है, वही पद हैं जहाँ उन तीन कालावधियों को प्रस्तुत किया गया है, और उन्हीं नौ पदों में, सत्य के खोले जाने पर संपन्न होने वाली शुद्धिकरण-प्रक्रिया को "शुद्ध किए गए, उज्ज्वल किए गए और परखे गए" के रूप में व्यक्त किया गया है। उन तीन पदों में वर्णित तीन कालावधियाँ—ज्ञान की वृद्धि, अंत के समय, और अंतिम दिनों में—परमेश्वर की वाचा के लोगों की अंतिम परीक्षा और मुहरबंदी की प्रक्रिया का प्रतिनिधित्व करती हैं। उसी इतिहास में अंतिम दिनों में परमेश्वर के लोगों पर आने वाले प्रतीकात्मक "आश्चर्य" प्रस्तुत किए गए हैं। कृपया इस अनुच्छेद को फिर से पढ़ें।

नौ पदों के उस खंड में, तीन पदों में वर्णित तीन अवधियाँ दानिय्येल की पुस्तक के चरमबिंदु का प्रतिनिधित्व करती हैं, और वहाँ प्रस्तुत चरमबिंदु आंतरिक भविष्यवाणी की धारा का चरमबिंदु है; यह इस बात की कहानी है कि एक चट्टान बिना हाथों के किस प्रकार एक पहाड़ से "काट" कर निकाली जाती है, जो शेष लोगों की कहानी है। उस आंतरिक धारा को अध्याय दस और बारह में दर्शाया गया है, और भविष्यवाणी की बाहरी धारा का चरमबिंदु अध्याय ग्यारह के समापन पदों में तथा दानिय्येल बारह के आरंभिक कुछ पदों में है।

वे तीन कालखंड उलाई और हिद्देकेल नदियों की गवाही से संबंधित दर्शनों का चरम भी हैं, और वे तीन पद एक भविष्यसूचक अवधि को सम्मिलित करते हैं जो वाचा-सम्बन्धी समय-भविष्यवाणी की चरम पूर्ति का प्रतिनिधित्व करती है, जो अब्राहम और पौलुस—दोनों—को साक्षी के रूप में प्रस्तुत करती है। यीशु, सन के वस्त्र पहने हुए पुरुष के रूप में, पद सात में जल पर चलते हुए हैं। पद ग्यारह में दो आवाज़ें—जो मसीह की ही आवाज़ हैं—सुनाई देती हैं, और अब्राहम तथा पौलुस गवाही देने के लिए खड़े होते हैं। पद बारह में परमेश्वर की प्रजा के मुहरबंद किए जाने का इतिहास प्रस्तुत है, क्योंकि एक लाख चवालीस हज़ार कुँवारे कहलाते हैं, और कुँवारों का अनुभव दस कुँवारियों के दृष्टान्त में दिखाया गया है, और पद बारह में आशीष उन पर है जो प्रतीक्षा करते हैं। दृष्टान्त में जो प्रतीक्षा करते हैं, और जो "धन्य" हैं, वे वे हैं जिन्हें वह वस्त्र प्राप्त होता है जो उन्हें विवाह में प्रवेश करने देता है, जब द्वार बन्द हो जाता है।

सातवें पद में यीशु जल पर चल रहे हैं, जिससे भय उत्पन्न होता है, परन्तु पतरस विश्वास करने का निश्चय करता है और चलना शुरू करता है तथा परमेश्वर को महिमा देता है; फिर भी पतरस प्रायः दोनों वर्गों का प्रतीक है, और जैसे ही उसके न्याय की घड़ी आ पहुँचती है, महिमा फिर से भय में बदल जाती है। सातवें पद में स्थित पहला कालखंड प्रथम स्वर्गदूत के संदेश का प्रतिनिधित्व करता है। यीशु जल पर हैं—यह भय और प्रथम स्वर्गदूत का प्रतीक है। तब यीशु एक ऐसा कालखंड पहचानते हैं जिसमें वे रविवार के कानून के न्याय से पहले अपने लोगों को महिमा देंगे। तीनों स्वर्गदूतों के तीनों तत्व सातवें पद में ही निहित हैं, क्योंकि सातवां पद तीन स्वर्गदूतों का प्रतिनिधित्व करने वाले तीन पदों में से पहला है।

ग्यारहवाँ पद अब्राहम और पौलुस की अल्फा आवाज़ों के प्रति अपनी ओमेगा गवाही द्वारा एक 'दोहरेपन' को प्रस्तुत करता है। उनकी 'दोहरी' आवाज़ें मिलकर वाचा की समय-भविष्यवाणी को स्थापित करती हैं, और ग्यारहवाँ पद ओमेगा के रूप में उस भविष्यवाणी को इस प्रकार पूरा करता है कि वह उस भविष्यसूचक काल की पहचान करता है

जो 1798 में बाबेल के पतन पर समाप्त होता है, और इस प्रकार अंतिम दिनों में जब मीकाएल उठ खड़ा होता है, तब होने वाले बाबेल के पतन का प्रतिरूप ठहरता है। ग्यारहवें पद में हमारे पास भविष्यद्वक्ताओं का एक दोहरा है, और एक ऐसा काल है जो बाबेल के दो पतनों का प्रतिनिधित्व करता है, और इस प्रकार दूसरे स्वर्गदूत के उस संदेश का प्रतिनिधित्व करता है जिसने घोषणा की, "बाबेल गिर गया, गिर गया।"

पद सात पहला स्वर्गदूत का संदेश है, और पद ग्यारह दूसरा स्वर्गदूत का संदेश है; और पद बारह, जो दानियेल 12*12 या दानियेल 144 है, बुद्धिमानों और मूर्खों के बीच के भेद के बारे में है, जो उस न्याय-प्रक्रिया में सम्पन्न होता है जो न्याय के संकट में चरित्र के प्रगटीकरण पर समाप्त होती है। पद बारह तीसरे स्वर्गदूत का संदेश है, जो यह पहचानता है कि संसार दो वर्गों में कैसे विभाजित होता है, और उसी विभाजन के तीसरे स्वर्गदूत के बाहरी चित्रण का समकक्ष, पद बारह में प्रदर्शित तीसरे स्वर्गदूत का आंतरिक विभाजन है। पद सात, ग्यारह और बारह तीन स्वर्गदूतों के संदेश हैं और ये पद उस प्रकाश को प्रकट करते हैं जिसकी मुहर अंतिम दिनों में खोली जाती है। अंतिम दिनों में इन तीन पदों की मुहर खुलना प्रकाशितवाक्य अध्याय दस के अनुरूप है।

अध्याय दस में, मसीह शक्तिशाली स्वर्गदूत तथा यहूदा के गोत्र के सिंह के रूप में, 'सिंह' की तरह गरजा और उसकी दहाड़ से सात गर्जनाएँ उत्पन्न हुईं, जिन्हें मुहरबंद कर दिया गया, जैसे दानियेल अध्याय दस को भी मुहरबंद किया गया था। ये समानांतर अंश हैं। इसी कारण, अध्याय बारह में जो तीन कालावधियाँ हैं, वे भी प्रकाशितवाक्य अध्याय दस की सात गर्जनाएँ हैं।

"सात गर्जनाएँ" बस मसीह के "अल्फा और ओमेगा" होने की एक और अभिव्यक्ति हैं, क्योंकि "सात गर्जनाएँ" का मुख्य सांकेतिक अर्थ यह है कि वे उन "घटनाओं की रूपरेखा" का प्रतिनिधित्व करती हैं जो 1798 से 1844 तक घटित हुईं, और जिनकी पुनरावृत्ति "भविष्य की घटनाओं" में होगी, जो एक लाख चवालीस हजार के इतिहास में "अपने क्रम में प्रकट की जाएँगी"। "सात गर्जनाएँ" इसलिए "अल्फा और ओमेगा" का प्रतीक हैं; जो आदि और अंत भी हैं; पहला और अंतिम, नींव और मंदिर; कोणशिला और शिरोशिला—सात गर्जनाएँ।

दानियेल बारह में तीन प्रतीकात्मक अवधियों का प्रकाश सात गर्जनाओं के प्रकाश के साथ मेल खाना चाहिए, क्योंकि वे एक ही भविष्यसूचक रेखा हैं। पहली अवधि में मसीह दोनों हाथ स्वर्ग की ओर उठाए हुए हैं, जैसे कि प्रकाशितवाक्य दस में वह एक हाथ स्वर्ग की ओर उठाते हैं। प्रकाशितवाक्य दस में, उनका वह हाथ भविष्यसूचक समय के अनुप्रयोग के अंत का प्रतीक बन जाता है, जो भविष्यसूचक समय-अवधियों से केवल भविष्यसूचक अवधियों में होने वाले परिवर्तन को चिह्नित करता है। मिलेराइटों द्वारा प्रयुक्त प्रमुख भविष्यसूचक नियम में वह परिवर्तन, मसीह के समय में शाब्दिक से आध्यात्मिक में हुए बड़े परिवर्तन द्वारा प्रतिरूपित किया गया था।

चुनी हुई प्रजा की भविष्यसूचक रेखा से जुड़े एक प्रमुख भविष्यसूचक नियम की स्थापना करने के लिए प्रेरित पौलुस को उठाया गया था। आध्यात्मिक इस्राएल की बिल्कुल शुरुआत में, एक प्रमुख भविष्यसूचक नियम स्थापित किया गया, जो वाचा को ही पुनर्परिभाषित करता है। तब से, अब्राहम की संतान होना रक्त से नहीं, बल्कि विश्वास से था। वह भविष्यसूचक सिद्धांत मुख्यतः पौलुस की लेखनी के माध्यम से स्थापित किया गया; इसी संदर्भ में वे प्रकाशितवाक्य अध्याय दस के मसीह का प्रतिरूप ठहरते हैं, जिसने 1844 में भविष्यसूचक समय के अनुप्रयोग को बदल कर उसे समाप्त कर दिया।

मानवजाति के साथ वाचा इंद्रधनुष द्वारा दर्शित है, और नूह का जहाज़ उस समय-काल का प्रतिनिधित्व करता है—जलप्रलय के पहले और बाद का—जब कोई स्पष्ट रूप से पहचानी गई चुनी हुई प्रजा नहीं थी। अब्राहम का बुलाया जाना परमेश्वर के मानवजाति के साथ भविष्यवाणात्मक संबंध में एक बड़ा और महत्वपूर्ण परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करता था। अब्राहम के साथ की गई वाचा ने वाचा-इतिहास की धारा में एक बड़े परिवर्तन को दर्शाया, और ऐसा करते हुए वह पौलुस के दिनों में शाब्दिक से आत्मिक की ओर हुए बड़े परिवर्तन की, तथा 1844 में समय-आधारित अनुप्रयोग से समय का कोई अनुप्रयोग न रहने की ओर हुए परिवर्तन की, पूर्णछाया थी।

मानवजाति के साथ परमेश्वर की वाचा में पहला परिवर्तन बाग में हुआ, और स्पष्ट परिवर्तन यह था कि जीवन के वृक्ष पर प्रतिबंध लगा दिए गए और इससे वस्त्रों में भी परिवर्तन आया—आध्यात्मिक प्रकाश से शाब्दिक मेमने की खाल तक। वाचा के इतिहास में अगला बड़ा परिवर्तन जलप्रलय है, जिसका प्रतिनिधित्व नूह करते हैं, जैसे पहले बड़े वाचा-परिवर्तन का प्रतिनिधित्व आदम ने किया था। फिर अब्राम के साथ एक चुनी हुई प्रजा की ओर परिवर्तन हुआ, जो मूसा तक पहुँचा; और मूसा ने वह भविष्यवाणी सिद्धांत प्रस्तुत किया कि एक दिन एक वर्ष का प्रतिनिधित्व करता है। यह सिद्धांत 1844 तक मान्य रहा, जब एक और बड़ा वाचा-परिवर्तन हुआ। वाचा के इतिहास के महान कालखंडों में परमेश्वर के भविष्यवाणी वचन के किसी न किसी सिद्धांत में सदा एक बड़ा परिवर्तन होता है। एक लाख चवालीस हजार के इतिहास के दौरान जो परिवर्तन होता है, वह यह है कि अल्फा और ओमेगा ही सत्य है। अल्फा और ओमेगा वह सिद्धांत है कि परमेश्वर के वचन में अंत सदा प्रारंभ से चित्रित किया जाता है। उस अल्फा-ओमेगा सिद्धांत के साथ हिब्रू शब्द "सत्य" की त्रिविध संरचना जुड़ी हुई है।

शेष लोगों के इतिहास के दौरान होने वाला प्रमुख भविष्यवाणी परिवर्तन प्रत्येक मुख्य वाचा-इतिहास में सीधे रूप से दर्शाया गया है, और सत्य की अन्य रेखाओं में भी ऐसा ही है। यशायाह 22:22 में एलियाकीम पर रखी गई "कुंजी" वही कुंजी है जो मत्ती सोलह में पनियम पर पतरस को दी गई थी। वही कुंजी फिलाडेल्फिया की कलीसिया को दी गई है, और वही विलियम मिलर को दी गई थी, जिसने उन्हें उस "एक दिन = एक वर्ष" सिद्धांत से जोड़ने में सक्षम बनाया जिसे मूसा के इतिहास के दौरान मूसा द्वारा लिपिबद्ध किया गया था, जो मिलराइटों के इतिहास का प्रतिरूप था। मूसा की भविष्यवाणी से मिलर का सम्बन्ध, पौलुस के अब्राम की भविष्यवाणी से सम्बन्ध द्वारा दर्शाया गया था। और मिलर का मूसा से क्यों न जुड़ना चाहिए? एक सन्दूक में मूसा का उद्धार, दोनों वाचाओं को जोड़ने के लिए, एक सन्दूक में नूह के उद्धार से जुड़ा हुआ था। एदेन में आरम्भ होने वाले भविष्यवाणी अनुप्रयोग के ये परिवर्तन यह सूचित करते हैं कि प्रमुख भविष्यवाणी प्रकाश का एक प्रकाशन अन्तिम वाचा के लोगों—एक लाख चवालीस हजार—के इतिहास में पहचाना जाता है। मेरा मत है कि मुख्य भविष्यवाणी परिवर्तन सात गर्जनाओं द्वारा दर्शाया गया है, जो दानिय्येल बारह की तीन अवधियों से सीधे जुड़े हैं, और इन्हें केवल तब पहचाना जाता है जब अल्फा और ओमेगा के सिद्धान्तों को रेखा पर रेखा के अनुप्रयोग पर लागू किया जाता है, जो सत्य की तीन-चरणीय संरचना पर आधारित है।

उस घोषणा से ठीक पहले की आयतों में कि "अब समय नहीं रहा," मसीह ने सात गर्जनाओं का उल्लेख किया, जिन्हें—जैसे दानिय्येल अध्याय बारह की सच्चाइयों के साथ हुआ—मुहरबंद कर दिया गया। बारहवें अध्याय में लिनन वस्त्र पहने हुए पुरुष का दोनों हाथ उठाना दानिय्येल की पुस्तक की मुहर के खुलने के संदर्भ में है, और प्रकाशितवाक्य अध्याय दस में सिंह के रूप में मसीह का संदर्भ सात गर्जनाओं के मुहरबंद किए जाने से है। सिस्टर वाइट सात गर्जनाओं के मुहरबंद किए जाने को दानिय्येल की पुस्तक के मुहरबंद किए जाने के साथ जोड़ती हैं।

“इन सात गर्जनों के अपने शब्द प्रकट कर चुकने के बाद, छोटे पुस्तक के संबंध में जैसा दानिय्येल को आदेश दिया गया था, वैसा ही आदेश यूहन्ना को दिया जाता है: 'जो बातें उन सात गर्जनों ने कहीं, उन पर मुहर लगा दे।' ये भविष्य की उन घटनाओं से संबंधित हैं जो अपने क्रम में प्रकट की जाएँगी।" द सेवन्थ-डे एडवेंटिस्ट बाइबल कमेंट्री, खंड 7, 971.

सात गर्जनों को प्रकाशितवाक्य अध्याय दस और भविष्यवाणी की आत्मा, तथा 1840 से 1844 तक के मिलरवादियों के इतिहास द्वारा परिभाषित किया गया है; और वही इतिहास एक लाख चवालीस हजार के इतिहास में दोहराया जाता है। उसी अंश में कहा गया है, "यूहन्ना को दिया गया विशेष प्रकाश, जो सात गर्जनों में व्यक्त किया गया था, उन घटनाओं का निरूपण था जो पहले और दूसरे स्वर्गदूत के संदेशों के अंतर्गत घटित होने वाली थीं। लोगों के लिए इन बातों को जानना उचित नहीं था, क्योंकि उनका विश्वास अनिवार्यतः परखा जाना था। परमेश्वर की व्यवस्था में अत्यंत अद्भुत और उन्नत सत्य घोषित किए जाने थे।" मिलरवादी यह नहीं समझते थे कि उन्हें दो निराशाओं का सामना करना पड़ेगा, क्योंकि उनकी समझ की कमी ही उन्हें परखने के लिए नियत की गई थी। मिलरवादियों को "उन्नत सत्यों" का कोई आभास नहीं था; अर्थात् वे वाचा के इतिहास में "बड़े भविष्यवाणीगत परिवर्तन" की अपेक्षा नहीं कर रहे थे।

यद्यपि "मिलराइटों के लिए इन बातों को जानना सबसे अच्छा नहीं था," एक लाख चवालीस हजार की परीक्षा उसी इतिहास से ली जाती है; लेकिन इतिहास को मासूमियत से गलत समझ लेने के कारण नहीं, बल्कि उस इतिहास को न समझने के कारण, जिसे आपको जानना आवश्यक है। यह वही परीक्षा है, बस उलटी। प्रकाशितवाक्य अध्याय 10 में यूहन्ना सबसे पहले और मुख्यतः एक लाख चवालीस हजार का प्रतिनिधित्व करता है, और केवल द्वितीय रूप से, पहले और दूसरे स्वर्गदूतों के मिलराइट आंदोलन का। यह स्पष्ट होता है जब आप देखते हैं कि यूहन्ना को छोटी पुस्तक खाने से पहले ही बता दिया गया था कि वह पहले मीठा और फिर कड़वा होगा। यह मिलराइटों के लिए जानना सबसे अच्छा नहीं था कि उसका क्या अर्थ है, परन्तु यूहन्ना उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो पहले से जानते हैं कि जब मिलराइटों ने छोटी पुस्तक खाई तो क्या हुआ।

और मैं उस स्वर्गदूत के पास गया, और उससे कहा, वह छोटी पुस्तक मुझे दे। और उसने मुझसे कहा, इसे ले ले, और इसे खा जा; और यह तेरे पेट को कड़वा कर देगी, परन्तु तेरे मुंह में मधु के समान मीठी होगी। और मैंने वह छोटी पुस्तक उस स्वर्गदूत के हाथ से ले ली, और उसे खा गया; और वह मेरे मुंह में मधु के समान मीठी थी; और जैसे ही मैंने उसे खाया, मेरा पेट कड़वा हो गया। प्रकाशितवाक्य 10:9, 10.

अध्याय दस में प्रस्तुत इतिहास—अर्थात् 1840 से 1844 तक का खट्टा-मीठा अनुभव—के बारे में जॉन को पहले से ही बता दिया गया है। वह अनुभव, जो पद नौ और दस में इतनी स्पष्टता से प्रस्तुत है, पद दो से लेकर चार तक में भी स्पष्ट रूप से चिह्नित किया गया है।

और उसके हाथ में एक छोटी खुली पुस्तिका थी; उसने अपना दाहिना पाँव समुद्र पर और बायाँ पाँव पृथ्वी पर रखा। और उसने सिंह के गरजने के समान ऊँची आवाज़ से पुकारा; और जब उसने पुकारा, तो सात गर्जनाओं ने अपनी आवाज़ें सुनाईं। और जब सात गर्जनाओं ने अपनी आवाज़ें सुना दीं, तो मैं लिखने ही वाला था; परन्तु मैंने स्वर्ग से एक आवाज़ सुनी जो मुझसे कहती थी, 'जो बातें सात गर्जनाओं ने कही हैं, उन्हें मुहरबंद कर दे, और उन्हें न लिख।' प्रकाशितवाक्य 10:2-4.

"सात गर्जनाएँ" "घटनाओं की रूपरेखा" का प्रतिनिधित्व करती हैं जो पहले और दूसरे स्वर्गदूतों के अधीन घटित होंगी, और साथ ही "भविष्य की वे घटनाएँ जो अपने क्रम में प्रकट की जाएँगी" का भी। "सात गर्जनाएँ" उस सत्य का प्रतिनिधित्व करती हैं कि मिलराइट्स का इतिहास एक लाख चवालीस हजार के इतिहास में दोहराया जाता है, और 1798 में और उसके बाद अंत के समय में जिन सत्यों की मुहर खोली गई थी, वे परमेश्वर के लोगों के अंतिम दिनों में सत्य की मुहर खुलने का प्रतिनिधित्व करती हैं। प्रकाशितवाक्य 10 में वर्णित यीशु का दानिय्येल 12 में वर्णित यीशु से सामंजस्य है। दोनों अंशों में अंतिम दिनों में परखने वाले सत्य की मुहर लगने और खुलने की बात प्रस्तुत की गई है।

कुछ लोग यह तर्क दे सकते हैं कि सातवीं आयत में यीशु बोल रहे हैं, पर ग्यारहवीं और बारहवीं आयतों में दानिय्येल से गब्रिएल बोल रहा है; परन्तु यह भी समझा जा सकता है कि तीनों ही स्थानों पर यीशु ही बोल रहे हैं। विषय के किसी भी पक्ष से देखें, दानिय्येल के माध्यम से बोलने वाली वाणी मसीह की ही है, और बारहवें अध्याय की भविष्यवाणी की तीन कालावधियाँ मसीह के ही वचन हैं, और वह सत्य की संरचना में इन तीन कालों को प्रस्तुत करता है। ये तीनों काल मुहरबंद हैं, जिससे वे एक त्रि-गुना प्रतीक बन जाते हैं।

सातवाँ पद 'आश्चर्यों' के समापन की ओर संकेत करता है, और परमपवित्र स्थान में मसीह के उस अंतिम कार्य की पहचान करता है, जब वह एक लाख चवालीस हजार के पाप मिटाता है और उन पर मुहर लगाता है। पहला पद 'आश्चर्यों' की पहचान करता है, और तीनों में से अंतिम पद भी 'आश्चर्यों' की पहचान उन लोगों के रूप में करता है जो प्रतीक्षा करने और पहली निराशा का अनुभव करने के कारण धन्य ठहराए गए हैं। बीच की अवधि रविवार के क्रानून के संकट के दौरान मानवजाति के विद्रोह की पहचान करती है, और साथ ही रविवार के क्रानून तक ले जाने वाली अवधि को एक लाख चवालीस हजार की तैयारी की अवधि के रूप में भी चिह्नित करती है। सभी पद सीधे-सीधे यह बताते हैं कि 'अंत के दिनों' में दानियेल की प्रजा पर 'क्या घटेगा'। तीनों पद एक लाख चवालीस हजार के शुद्धीकरण

के विषय को संबोधित करते हैं। पहली अवधि तीसरी अवधि से मेल खाती है, और बीच की अवधि पूरे संसार के विद्रोह का प्रतिनिधित्व करती है, जब वे अरमगेदोन की ओर कूच करते हैं।

यदि वे तीन कालखंड ही "सात गर्जनाएँ" भी हैं, तो उन तीन पदों में उन "भावी घटनाओं" की पहचान होनी चाहिए, "जो अपने क्रम में [प्रकट] की जाएँगी," और वे "भावी घटनाएँ" 1840 से 1844 तक "पहले और दूसरे स्वर्गदूत के अंतर्गत घटी घटनाओं के वर्णन" के अनुरूप होंगी। ऐसे कई सत्य हैं जिन्हें इस आंदोलन ने स्वीकार किया है, जो अग्रदूतों की समझ से स्पष्ट रूप से भिन्न हैं, फिर भी वे सभी सत्य अग्रदूतों की समझ से सहमत हैं। मिलरवादियों के समय से लेकर अब तक एक बड़ा भविष्यवाणी संबंधी परिवर्तन हुआ है। दिन के बदले वर्ष का सिद्धांत इसका आदर्श उदाहरण है, पर अन्य भी हैं। ऐसे बड़े भविष्यवाणी संबंधी परिवर्तन का एक उदाहरण "सात गर्जनाओं" के संदर्भ में दिखाई देता है।

अध्याय दस के अंतिम पद में जब जॉन को यह बताया गया कि उसे फिर से भविष्यवाणी करनी होगी, और इस प्रकार यह रेखांकित किया गया कि अध्याय दस का इतिहास मिलराइट आंदोलन तथा एक लाख चवालीस हजार दोनों का प्रतिनिधित्व करता था, तब उसे मंदिर को नापने के लिए एक मापने की छड़ी दी गई, परंतु उसे प्रांगण को छोड़ देने के लिए कहा गया।

और मुझे एक सरकण्डा दिया गया जो छड़ी के समान था; और स्वर्गदूत खड़ा हुआ, और कहने लगा, उठ, और परमेश्वर के मन्दिर, और वेदी, और उनमें उपासना करने वालों को नाप। परन्तु मन्दिर के बाहर के आँगन को छोड़ दे, और उसे मत नाप; क्योंकि वह अन्यजातियों को दे दिया गया है; और वे पवित्र नगर को बयालीस महीने तक पैरों तले रौंदेंगे। प्रकाशितवाक्य 11:1, 2

1844 के बाद मंदिर को मापते समय, यूहन्ना से कहा गया कि वह उन अन्यजातियों को बाहर रखे जो प्रांगण के रूप में दर्शाए गए हैं। 1844 में यह चित्रण यह दर्शा रहा था कि परमेश्वर ने अभी-अभी नई वाचा की दुल्हन चुनी थी, और तब उसकी दुल्हन और प्रांगण के बीच भेद कर दिया गया। बहन व्हाइट स्पष्ट रूप से बताती हैं कि प्रांगण अन्यजातियों का प्रतिनिधित्व करता है और मंदिर परमेश्वर की चुनी हुई प्रजा है; बस "The Desire of Ages" में "The Outer Court" अध्याय पढ़ लें।

जॉन मिलराइट्स का चित्रण कर रहा है, जो 1844 में ही परमेश्वर की चुनी हुई प्रजा बन गए थे। मिलराइट्स, जिन्होंने अभी-अभी कड़वा-मीठा संदेश का अनुभव किया था, और बाकी के कथित ईसाई जगत के बीच एक भेद स्थापित किया गया, जिन्हें अन्यजातियों के रूप में दर्शाया गया था।

नींव 1840 से लेकर पहली निराशा तक डाली गई, और मंदिर आधी रात की पुकार की घोषणा के दौरान पूरा हुआ। फिर महान निराशा आई और यूहन्ना से कहा गया कि उठो और नापो, परन्तु अन्यजातियों को छोड़ दो। यूहन्ना न्याय के आरंभ को दर्शा रहा है, और इसी कारण दैवीय प्रेरणा उन पदों में यूहन्ना के नापने को जाँच-पड़ताल के न्याय का प्रतीक मानती है। यूहन्ना को नापने के प्रतीक के रूप में लेकर जो बात हमने अभी प्रस्तुत की है, वह परंपरागत एडवेंटिस्ट समझ के अनुरूप है, परन्तु इस आंदोलन में उस प्रतीक की समझ में एक बड़ा परिवर्तन आया।

मिलराइट समझ के अनुरूप, हमने यह समझा कि योहन द्वारा दसवें अध्याय में प्रस्तुत मिलराइटों के इतिहास के भीतर एक समानांतर आंदोलन की भविष्यवाणी भी थी, जो एक लाख चवालीस हजार बनने वाला था। हमने यह पहचाना कि यदि आप मिलराइट इतिहास की मापें लेते हैं और अन्यजातियों का समय छोड़ देते हैं, तो आप वही मंदिर देख सकते हैं जिसे योहन माप रहा था।

हमने यह समझा कि 2520 वर्षों की एक समय-भविष्यवाणी 1798 में समाप्त होती है और दूसरी 1844 में, और इस प्रकार 46 वर्षों की वह अवधि प्रकट होती है जिसके दौरान मसीह ने मिलराइटों का मंदिर निर्मित किया। यूहन्ना ने प्रांगण को अन्यजातियों का बताया, और एक भविष्यसूचक 'अन्यजातियों का समय' भी है।

और वे तलवार की धार से गिरेंगे, और सब जातियों में बन्दी करके ले जाए जाएँगे; और यरूशलेम अन्यजातियों के पैरों तले रौंदी जाएगी, जब तक कि अन्यजातियों के समय पूरे न हो जाएँ। लूका 21:24।

'अन्यजातियों के समय' बहुवचन में है, और वे उन दो अवधियों का प्रतिनिधित्व करते हैं जब शाब्दिक और आध्यात्मिक इस्राएल दोनों को रौंदा गया था। मूर्तिपूजकता के, और उसके बाद पोपतंत्र के, रौंदे जाने की इन दो घटनाओं में से अंतिम 1798 में समाप्त हुई। चाहे जो भी दावा किया जाए, 'अन्यजातियों के समय' 1798 में, पहले स्वर्गदूत के आगमन के साथ, समाप्त हो गए। यूहन्ना को 1798 में मापना आरम्भ करना था, उससे पहले नहीं। उसे 1844 के इतिहास में रखा गया, इसलिए 1798 में समाप्त हुई अवधि को छोड़ देना, आँगन को छोड़ देने के समान था; और ऐसा करने पर वे छियालिस वर्ष प्रकट होते हैं जब वाचा के दूत द्वारा मिलरवादी मंदिर खड़ा किया गया था। इस अनुप्रयोग से अनेक संबंधित सच्चाइयाँ निकलती हैं, पर मैं इसे केवल ऐसे प्रकाश के उदाहरण के रूप में उपयोग कर रहा हूँ जो अग्रदूतों की समझ से भिन्न है, फिर भी मूल सच्चाइयों का खंडन नहीं करता, बल्कि अब समय-निर्धारण लागू नहीं करता।

वह विशेष सत्य 9/11 से पहले पहचाना गया था, पर 9/11 के बाद ही वह सचमुच गहराई से स्थापित हुआ। यूहन्ना द्वारा मंदिर को मापने का सत्य सात गर्जनाओं से अलग नहीं किया जा सकता, क्योंकि वह वही पद्यांश है। सात गर्जनाओं के अनुप्रयोग के बारे में एक सत्य ऐसा था जो उस काल तक मुहरबंद था जब तक दानिय्येल अध्याय बारह की "अद्भुत बातें" पूरी नहीं हो जातीं। जुलाई 2023 के बाद जो "सात गर्जनाओं" का अनुप्रयोग खोला गया, वह दानिय्येल बारह के तीन पदों के साथ पूरी तरह मेल खाता है, या कहूँ तो, उन्हें एक गहन रीति से पूरक करता है।

सिस्टर वाइट डैनियल और रिवेलेशन की पुस्तकों के संबंध का वर्णन करने के लिए 'complement' शब्द का प्रयोग करती हैं, न कि 'compliment' का। 'Complement', जिसका अर्थ "पूर्णता तक पहुँचाना" है, वही है जो ये दोनों भविष्यसूचक पुस्तकें एक-दूसरे के लिए करती हैं। जुलाई 2023 के बाद डैनियल के बारहवें अध्याय में जब सात गर्जन की मुहर खुलती है, तो उसमें निहित संदेश पूर्णता तक पहुँचता है। सात गर्जन को खोलने वाली बात है अल्फा और ओमेगा का सिद्धांत, जो सत्य की संरचना के साथ मिलकर कार्य करता है।

अन्यजातियों का "समय" 1798 में पूर्ण हुआ, और वह 1260 वर्षों की दो अवधियों का प्रतिनिधित्व करता है जब पहले मूर्तिपूजा और फिर पापत्व ने पवित्रस्थान और सेना को रौंदा। मंदिर को नापते समय हमें आँगन को छोड़ देना है, और आँगन 1798 तक विस्तृत है; पर 1844 के बाद समय अब और नहीं रहा। आज 1260 वर्ष केवल उस कालखंड का प्रतिनिधित्व करते हैं जो मंदिर और आँगन के बीच के भेद को चिन्हित करता है। इसी कारण 18 जुलाई, 2020 से लेकर जुलाई 2023 तक रौंदना पूरा हुआ। आज मंदिर को नापना—उन सात गर्जनाओं के साथ मिलकर जो प्रथम और द्वितीय स्वर्गदूतों के संदेशों के अंतर्गत घटित घटनाओं की रूपरेखा प्रस्तुत करती हैं—यूहन्ना को सौंपा गया कार्य है। "हमारा महान कार्य" तीन स्वर्गदूतों के संदेशों को "संयोजित" करना है, और इस प्रकार उस भविष्यद्वाणीय कार्य की पहचान करना जो पूर्ववर्ती वाचा-इतिहास में किया नहीं गया था, और जो आज भी बहुत कम किया जाता है। जब हम अन्यजातियों के समय का प्रतिनिधित्व करने वाले आँगन को छोड़ देते हैं, तो हम पापाई उत्पीड़न के उन 1260 वर्षों को छोड़ रहे होते हैं, जो 1798 में अंत के समय पर समाप्त हुए।

मिलेराइट इतिहास में छियालीस वर्षों में निर्मित किया गया मंदिर उस मंदिर की पहचान करता है जो जुलाई 2023 से लेकर रविवार के कानून के ठीक पहले तक स्थापित किया जा रहा है। वह इतिहास सात गर्जनाओं की "भविष्य की घटनाओं" की अवधि है, जो "होंगी", "हो सकती है" नहीं, "उनके क्रम में प्रकट की जाएँगी"।

जब हम प्रथम स्वर्गदूत का इतिहास द्वितीय के इतिहास के साथ मिलाते हैं, तो हमें पता चलता है कि वह इतिहास एक अल्फा निराशा से आरंभ होता है और एक ओमेगा निराशा पर समाप्त होता है। जब हम 1840 से 19 अप्रैल, 1844 तक प्रथम स्वर्गदूत के इतिहास के भविष्यसूचक मार्गचिह्नों को उस समय आए द्वितीय स्वर्गदूत के मार्गचिह्नों के साथ संरेखित करते हैं—जो 22 अक्टूबर, 1844 को तृतीय के आगमन तक जारी रहे—तो हमारे पास दो अवधियाँ होती हैं, जो दोनों एक स्वर्गदूत के आगमन से शुरू होती हैं और एक स्वर्गदूत के आगमन पर समाप्त होती हैं। प्रथम से

द्वितीय तक का इतिहास, द्वितीय से तृतीय तक के इतिहास को दर्शाता है।

यह कि यह एक वैध अनुप्रयोग है, उसका भविष्यसूचक साक्ष्य उस अनुप्रयोग के अल्फा और ओमेगा में मिलता है। दो समानांतर रेखाएँ एक साथ लागू की जाती हैं, और दोनों रेखाओं का आरंभ और अंत एक स्वर्गदूत के आगमन की पहचान कराते हैं। तब जब उन्हें रेखा पर रेखा जोड़कर एक ही रेखा में मिला दिया जाता है, तो आरंभ पहली निराशा को चिह्नित करता है और अंत महान निराशा को चिह्नित करता है। एक और साक्ष्य अल्फा और ओमेगा के सिद्धांतों में मिलता है, जो अंत को आरंभ से बड़ा बताता है। एक अल्फा निराशा, जो महान ओमेगा निराशा पर समाप्त होती है, अल्फा और ओमेगा के लघु और महान तत्वों की पहचान कराती है।

जब हम 19 अप्रैल, 1844 से शुरू करते हैं (दूसरे स्वर्गदूत का आगमन, जो 22 अक्टूबर, 1844 को तीसरे स्वर्गदूत के आगमन तक ले जाता है); और फिर हम दूसरी रेखा 11 अगस्त, 1840 से भी शुरू करते हैं, जो 19 अप्रैल, 1844 को समाप्त होती है, तो हम पाते हैं कि 19 अप्रैल, 1844 की निराशा, पहली और दूसरी स्वर्गदूतों की भविष्यवाणी की रेखाओं को मिलाकर बनने वाली भविष्यवाणी की रेखा का अल्फा और ओमेगा दोनों है।

उस अवधि के अंत में, दूसरे स्वर्गदूत के साथ तीसरा स्वर्गदूत आता है, जो 9/11 का प्रतिरूप है, और यह प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह के शक्तिशाली स्वर्गदूत के दो स्वर्गों की ओर भी संकेत करता है। वे दो स्वर दूसरे और तीसरे स्वर्गदूत के संदेश हैं, और वे दोनों स्वर्गदूत 22 अक्टूबर, 1844 को आपस में मिले थे, और जब दोनों इतिहासों को पंक्ति पर पंक्ति रखकर साथ लाया जाता है तो वे फिर मिलते हैं। इस प्रकार साथ लाए जाने पर वे प्रथम निराशा से लेकर महान निराशा तक के इतिहास का प्रतिनिधित्व करते हैं; और मिलराइटों के समय उस इतिहास के मध्य का मार्गचिह्न एक्सेटर कैम्प मीटिंग था, जहाँ उपासकों के दो वर्ग प्रकट हुए, जो दृष्टांत की मूर्ख कुँवारियों के विद्रोह का प्रतिनिधित्व करते थे, और उस मध्य मार्गचिह्न की पहचान विद्रोह के रूप में करते थे।

सात गर्जनाएँ पंक्ति पर पंक्ति जोड़े गए पहले और दूसरे स्वर्गदूतों के संदेशों के इतिहास का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो फिर एक लाख चवालीस हजार के इतिहास में पहली निराशा से लेकर महान निराशा तक के इतिहास की पहचान करती हैं। उस इतिहास का भविष्यसूचक अर्थ समझना दानिय्येल बारह में प्रस्तुत उस संदेश के साथ बिल्कुल मेल खाता है, जिसे अंत के समय तक मुहरबंद रखा गया है।

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे, पर मैं दानिय्येल के अंतिम दर्शन के उस हिस्से को छोड़ दूँगा, जो केवल अंतिम दिनों में परमेश्वर की प्रजा का दानिय्येल द्वारा किया गया चित्रण है। प्रथम उल्लेख के सिद्धांत के संदर्भ में ध्यान दें कि पहले पद में दानिय्येल उस श्रेणी में है जो दर्शन को समझते हैं। दर्शन में सबसे पहले जिसका उल्लेख है, वह दानिय्येल का उन बुद्धिमानों के रूप में चित्रण है जो समझ रखते हैं, और अंतिम नौ पद बाईसवें दिन समझ रखने वाले बुद्धिमानों के विषय में ही हैं।

फ़ारस के राजा कुरूश के तीसरे वर्ष में दानिय्येल, जिसका नाम बेल्तशस्सर कहलाता था, पर एक बात प्रगट हुई; और वह बात सत्य थी, पर नियत समय लंबा था; और उसने उस बात को समझा, और दर्शन की समझ उसे हुई।

उन दिनों मैं दानिय्येल तीन पूरे सप्ताह शोक करता रहा। मैंने स्वादिष्ट भोजन नहीं किया; न मांस खाया, न दाखमधु पिया, और न ही मैंने अपने को तेल लगाया, जब तक कि तीनों सप्ताह पूरे न हो गए। और पहले महीने के चौबीसवें दिन, जब मैं उस बड़ी नदी के किनारे था, जो हिदेकेल है; तब मैंने अपनी आंखें उठाई, और देखा, और देखो

एक पुरुष, जो सन के वस्त्र पहने हुए था और जिसकी कमर ऊफाज़ के उत्तम सोने से कसी हुई थी; उसका शरीर भी पुखराज के समान था, और उसका मुख बिजली की चमक के समान, और उसकी आँखें आग की मशालों के समान, और उसकी भुजाएँ और उसके पाँव चमकते पीतल के समान रंग के थे, और उसके वचनों का स्वर बहुतां की ध्वनि के समान था।

और मैं, दानिय्येल, अकेला ही उस दर्शन को देखता रहा; क्योंकि जो पुरुष मेरे साथ थे उन्होंने उस दर्शन को नहीं देखा, परन्तु उन पर बड़ी कंपकंपी छा गई, और वे छिपने के लिए भाग गए। इस कारण मैं अकेला रह गया और इस महान दर्शन को देखा, और मुझ में कोई शक्ति न रही; क्योंकि मेरी शोभा मुझ में बदलकर कुरूपता हो गई, और मुझ में तनिक भी बल न बचा।

तौभी मैंने उसके वचनों की वाणी सुनी; और जब मैंने उसके वचनों की वाणी सुनी, तब मैं मुंह के बल गहरी नींद में पड़ गया, और मेरा मुख भूमि की ओर था। और देखो, एक हाथ ने मुझे छुआ, जिसने मुझे घुटनों और हाथों की हथेलियों के बल उठा दिया। और उसने मुझ से कहा,

हे दानिय्येल, अत्यन्त प्रिय व्यक्ति, जो बातें मैं तुमसे कहता हूँ उन्हें समझो, और सीधे खड़े हो जाओ; क्योंकि अब मैं तुम्हारे पास भेजा गया हूँ।

और जब उसने यह वचन मुझ से कहा, तो मैं काँपता हुआ खड़ा रहा। तब उसने मुझ से कहा,

डर मत, दानिय्येल; क्योंकि जिस पहले दिन से तूने समझने का मन लगाया और अपने परमेश्वर के सामने अपने आप को नम्र किया, तेरे वचन सुन लिए गए, और मैं तेरे ही वचनों के कारण आया हूँ। परन्तु फ़ारस के राज्य के प्रधान सरदार ने मुझे इक्कीस दिन तक रोके रखा; पर देख, प्रधान सरदारों में से एक मीकाएल मेरी सहायता को आया; और मैं वहाँ फ़ारस के राजाओं के साथ ठहरा रहा।

अब मैं तुझे यह समझाने आया हूँ कि अन्त के दिनों में तेरी प्रजा पर क्या बीतेगा, क्योंकि यह दर्शन बहुत दिनों बाद का है।

और जब उसने मुझ से ऐसी बातें कीं, तो मैंने अपना मुख भूमि की ओर कर लिया, और मैं निःशब्द हो गया। और देखो, मनुष्यों के पुत्रों के समान किसी ने मेरे होंठों को छुआ; तब मैंने अपना मुख खोला और बोलने लगा, और उससे कहा जो मेरे सामने खड़ा था,

हे मेरे प्रभु, इस दर्शन से मेरे दुःख मुझ पर आ पड़े हैं, और मुझमें कोई शक्ति नहीं रह गई। क्योंकि मेरे इस प्रभु का दास अपने इस प्रभु से कैसे बात कर सकता है?

क्योंकि जहाँ तक मेरा संबंध है, तुरंत ही मुझमें कोई शक्ति न रही, और मुझमें श्वास भी न बची। तब फिर एक, जो मनुष्य के रूप के समान था, आया और उसने मुझे छुआ, और उसने मुझे बल दिया, और कहा,

हे अत्यन्त प्रिय पुरुष, मत डर: तुझ पर शान्ति हो, बलवान बन, हाँ, बलवान बन। और जब उसने मुझसे कहा, तब मुझे बल मिला, और मैंने कहा, मेरे प्रभु बोलें; क्योंकि आपने मुझे बल दिया है। ...

परन्तु तू, हे दानिय्येल, इन वचनों को बन्द कर दे और इस पुस्तक पर अन्त समय तक मुहर लगा दे; बहुत से लोग इधर-उधर दौड़ेंगे, और ज्ञान बढ़ेगा।

तब मैं, दानिय्येल, ने देखा, और देखो, वहाँ दो और खड़े थे, एक नदी के तट के इस पार, और दूसरा नदी के तट के उस पार। और उनमें से एक ने उस सन के वस्त्र पहने हुए पुरुष से, जो नदी के जल के ऊपर खड़ा था, कहा, 'इन अद्भुत बातों का अंत कब तक होगा?'

और मैंने उस पुरुष को सुना जो सन के वस्त्र पहने हुए था, जो नदी के जल के ऊपर था; जब उसने अपना दाहिना और बायाँ हाथ स्वर्ग की ओर उठाया, और उस की शपथ खाई जो सदा जीवित रहता है कि यह एक समय, दो समय और आधा समय तक होगा; और जब वह पवित्र लोगों की शक्ति को तितर-बितर कर चुका होगा, तब ये सब बातें पूरी हो जाएँगी।

मैंने सुना, पर मैं समझा नहीं; तब मैंने कहा, हे मेरे प्रभु, इन बातों का क्या अंत होगा?

और उसने कहा, तू अपनी राह चला जा, दानिय्येल; क्योंकि ये बातें अंत के समय तक बंद और मुहरबंद कर दी गई हैं। बहुतों को शुद्ध किया जाएगा, उजला किया जाएगा और परखा जाएगा; परन्तु दुष्ट लोग दुष्टता ही करेंगे; और दुष्टों में से कोई नहीं समझेगा, परन्तु बुद्धिमान समझेंगे।

और जिस समय से नित्य बलिदान हटाया जाएगा, और उजाड़ने वाली घृणित वस्तु स्थापित की जाएगी, तब एक हजार दो सौ नब्बे दिन होंगे.

धन्य है वह जो प्रतीक्षा करता है, और एक हजार तीन सौ पैंतीस दिनों तक पहुँचता है।

परन्तु तू अंत तक अपने मार्ग पर चला जा; क्योंकि तू विश्राम करेगा, और दिनों के अंत में अपने भाग में खड़ा होगा। दानिय्येल 10:1-18; 12:4-13.